SHRI NIREN GHOSH (Dera Dun): You call a meeting of the B.A.C. at 1 O'Clock and decide.

SHRI SATYASADHAN CHARKRABORTY: Your silence is deafening.

(*Interruptions*)

SHRI K. MAYATHEVAR: Kindly tell me, "Do you allow or disallow?". I demand of the Minister concerned to make a statement.... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Not allowed. Shri Premi to call attention.

12.19 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC INPORTANCE

Reported increase in incidents on railway trains and at stations, especially dacoity on Tinsukhia Mail and scuffle at Bareilly Station.

श्री मंगल राम प्रेमी (बिजनौर) : मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर से रेल मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :

"रेलगाड़ियों में और रेल स्टेशनों पर घटनाओं में वृद्धि के समाचार, विशेषकर हाल में तिनसुखिया मेल में हुई डकैती और बरेली रेल स्टशन पर यात्रियों के साथ कथित हाथापाई की घटनाएं

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS AND IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI MALLIKARJUN):

MR. SPEAKER, ; Sir.....

श्री मनी राम बागड़ी (हिसार) : रेल मंत्री जी बैठे हुए हैं और उप मंत्री जी जवाब दे रहे हैं——

अध्यक्ष महोदय: एक ही बात है ।

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS AND IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI MALLIKARJUN): Sir, I share the concern of the members about the incidents of crime on railways. I also regret to inform that a running train theft was committed in the First Class Coach in Tinsukhia Mail on the night of 8/9th October 1932. Amongst other passengers, the belongings of two Hon'ble Members of Parliament who were travelling by this Coach were also stolen. The incident of theft was discovered by the passengers in the early hours of the morning when they found their suit-cases lying in broken condition.

The policing on railways including protection of the person and property of passengers is the responsibility of the State Government. The RPF have no legal powers in the matter. This Tinsukhia Mail was being escorted by the Government Railways Police constables from Aligarh onwards. A case for running train theft has been registered at Allahabad and is under investigation by the Government Railway Police. The First Class Coach in which theft was committed was booked upto Allahabad. The Coach was correctly marshalled in the rear of the train but the Coach Attendant had absented himself from duty without notice. He has been placed under suspension. This case is very unfortunate and I am looking into corrective steps to be taken.

I have ordered Task Forces to be introduced at four stations on this section to enforce checks on entry of unauthorised persons into long distance trains with the assistance of the State Government. I have also addressed the Chief Ministers seeking their cooperation in this matter. Members of Parliament may, however, consider that this is primarily a law and order problem under the jurisdiction of the State Government. We are, however, thinking of passing an amendment to

strengthen the powers of the R.P.F. in order to provide additional security for Railways staff in discharging their duties to cantrol ticketless travel, unauthorised entry, etc. more effectively. Both the State Government and the Railway officials are involved. I seek the co-operation of the House in stamping out this menace as Government is determined to smash the racketeers and mischeifmakers.

In the other incident on 5-10-1982, ticketless passengers travelling by 143 Up passenger train were checked at Bareilly City Station by a contingent of Ticket Checking Staff. A Railway Magistrate was also present. During the check, the ticketless travellers offered ressistance and some of them even attacked the ticket checking staff, resulting in injuries to two Travelling Ticket Examiners, one of whom has sustained a fracture of his hand. The GRP and the RPF which was placed for the assistance of the Checking Staff intervened and helped them in rounding up the ticketless passengers. During the course of rounding up of the ticketless travellers, some of them might have got injuries in the melee. There was, however, no lathi charge. In all 253 ticketless passengers were apprehended. We have decided to take firm action against antisocial elements, and such incidents are in consequence thereof.

12.21 hrs.

[MR. DEPUTY SPEAKER *in the Chair*]

श्री मंगत राम प्रेमी : उपाध्यक्ष जी, मेरा यह ध्यानाकर्षण प्रस्ताव हिन्दी में था लेकिन मंत्री जी ने इसे अंग्रजी में पढ़ दिया, और वह पढ़ा भी उन्होंने जिनको नही पढ़ना चाहिए था मंत्री जो सीधे सादे बैठे हैं ....

MR. DEPUTY-SPEAKER: Every Member can speak either in English or Hindi. You can hear interpretation of the speech.

श्री मंगत राम प्रेमी : मैं अगर उनकी बात को नहीं समझ सका तो क्या सवाल पूछूंगा ? मान्यवर, रेलवे का जो इश्यू पार्लियामेंट में आज उठा है....

MR. DEPUTY SPEAKER: We are discussing a very important subject. Don't divert.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : (सैदपुर) : जब हम लोग कोई सवाल हिन्दी में करते हैं तो उसका जवाव भी हिन्दी में ही आना चाहिये । मान्यवर, आप पहले कान में लगाइये तब हमारी बात सुनिए । या तो वह कहदें कि हम अंग्रजी में ही बोलगें ....

MR. DEPUTY SPEAKER: It is left to the option of any Member including the Minister. You can speek in Telugu

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : वह अपनी मातृभाषा में पढ़े, तमिल या तेलगू में पढ़ें हमें कोई एतराज नहीं होगा ।

श्री मंगल राम प्रेमी : मान्यवर, यह महत्वपूर्ण मसला है और जनता के हित का ही नहीं है बल्कि इसमें हमारी भारत सरकार के मंत्री, संसद सदस्य, प्रदेश के मंत्री, एम०एल ए० और जनता के तमाम गरीव, अमीर लोग रेल से यात्रा करते हैं । लेकिन उनके साथ रेलवे में क्या दुर्व्यवहार होता है उसका नंगा नाच मैंने बरेली में स्वयं अपनी आंखों देखा । बरेली में जब ट्रेन से मुसाफिरों को उतारा गया, मंत्री जी का जवाब है कि बगैर-टिकट यात्रियों को पकड़ा जा रहा था, लेकिन मेने स्वयं यात्रियों के पास टिकट देखे हैं, जिनका सामान लूटा गया और उन्हें मारा गया । वे लोग अपने टिकट दिखा रहे थे कि हमारे पास टिकट है हमें न पीटा जायें, लेकिन उस वक्त टिकट और बे-टिकट की कोई बात नहीं थी, मारपीट चल रही थी, लोगों के हाथ-

पर तोड़ दिये गये, जबरदस्ती पुलिस वाले गाड़ी में घुस रहे थे । मैं उस रोज बरेली में मौजूद था, लोग अपने टिकट दिखात रह, लेकिन किसी को नही सुनी गई । मैंने स्वयं वहां यह नंगा नाच देखा है, मंत्री जी गलत बात कह कर इस सदन को गुमराह नहीं कर सकते, हैं, और इस झुटाई से बच नहीं सकते कि बगैर-टिकट यात्रियों को पकड़ा जा रहा था । वहां किसी बगैर टिकट यात्री को ही नहीं पीटा गया बल्कि टिकट वाले भी उतने ही पिट रहे थे, जितने की बगैर-टिकट वाले पिट रहे थे ।

मैं यह नहीं चाहता कि किसी बगैर टिकट यात्री को वैसे ही माफ कर दिया जाये, मगर यह भी कोई खास रूल नहीं है कि बगैर टिकट यात्री को पकड़ कर पीटो। अगर कोई बगैर टिकट है तो उस पर जुर्माना कर दिया जाये, उनको जेल भेज दिया जाये मगर यह किस ने बताया कि खुली जनता को डंडे से पीटा जाये ? मार-पीट का बरेली में यह नंगा नाच हुआ है, मंत्री जी इसको छिपा नहीं सकते, उनको इस पर इस्तीफा दे देना चाहिये ।

मैं बरेली के हस्पताल में भी गया, जहां कि पिटे हुए यात्रियों को भर्ती किया गया था । मैंने वह कमरा भी देखा जिसमें यात्रियों को जबर्दस्ती ठोका गया था । जब उस कमरे में जगह नहीं रही और यात्री बिलकुल भिच रहे थे, औरतें रो रहीं थीं कि पुलिस वालों ने गाड़ी में हामारी बेइज्जती की है, उसको भी किसी ने नहीं चेदेखा । मैंने अपनी नजरों से स्वयं देखा कि उन यात्रियों को धकेल-धकेल कर टट्टी और नहाने की जगहों में घुसेड़ दिया गया और वहां लोग 2, 2 घंट तक पड़े रहे, उनकी कोई सुनने वाला नही था । मंत्री जी कहते हैं कि बगैर-टिकट यात्रियों की पहचान की जा रही थी, मैं तो यह कहूंगा कि सैंटर की सरकार का खुला नंगा नाच था और उसमें कोई साजिश थी कि आगे किसी किस्म का जलूस या शांति मार्च दिल्ली में अगर हो तो लोग दिल्ली जाने के लिये तैयार न हों इसलिय उनकी अच्छी तरह पिटाई की जाये और उनको सबक सिखाया जाय जिससे वह किसी धोके में आकर दिल्ली न आ सकें ।

अब मैं तिनसुखिया गाड़ी की बात कहना चाहता हूं । उसमें जो कुछ हुआ है, वह किसी से छिपा नहीं है । उस गाड़ी में उस दिन हमारे 2 संसद सदस्य मौजूद थे जिसमें एक कांग्रेस आई के थे और दूसरे हमारे श्री वी डी सिंह थे जो कि हमारी पार्टी के मुख्य सचेतक हैं । इन दोनों का सामान भी उस दिन चोरी हुआ । मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि जब तिनसुखिया मेल नई दिल्ली से 10-06 पर रात्रि में रवाना होती है तो उस दिन वह 1035 पर क्यों रवना हुई ? श्री के पी तिवारी भी उसी गाड़ी में मौजूद थे और और जिस केबिन में श्री बी डी सिंह थे, उसी में तिवारी जी भी आ गये । जब गाड़ी रवाना हुई तो एक कर्मचारी आया और कहा कि हम लिस्ट देखना चाहते हैं कहां है । हमारा नाम कौनसी केबिन में हैं । वहां कहा गया कि यहां कोई लिस्ट नहीं है, जहां चाहो बैठ जाओ ।

इस तरह से वहां कोई लिस्ट नहीं, किसी की देखभाल नहीं, कहां संसद-सदस्य बैठे, कहां मिनिस्टर बैठेगें, उनकी सुरक्षा है या नहीं, और ये लोग बी क्लास के केबिन में जाकर बैठ गये और सो गये। हमारे श्री वी डी सिंह का कहना है कि न उसमें सुरक्षा गार्ड था,

[श्री मंगल राम प्रेमी]

न अटेंडेंट था और न कंडक्टर था और सहारनपुर तक कोई हमारी गाड़ी में नहीं आया। किसी ने गाड़ी में यह भी चैकिंग नहीं की कि कोई एम० पी० आया है या नहीं आया है। जो लुटेरे गाड़ी में घुसे वह साइड के डिब्बे में से घुसे। क्योंकि तिनसुखिया फार्स्ट ट्रेन है, दो डिब्बों के बीच में जो रास्ता होता है। उसका दरवाजा तोड़कर चोर उस डिब्बे में आये और श्री वी० डी० सिंह व श्री तिवारी का समान उठाकर बाथरुम में घुस गये। सुबह जब आंख खुली, तो उन्होंने देखा कि पहनने के कपड़ों का सुटकेस बाथरुम में रखा था। वही बता सकते हैं कि उसमें कितनी नकदी थी और क्या चोरी हुआ। मंत्री महोदय इस बारे में जवाब देगें। उनके कपड़ें बाथरूम में मिले। सवाल यह है कि उस वक्त जी आर पी और पुलिस और कंडक्टर वगैरह कहां थे। दस पंद्रह साल तक एक ही स्टेशन पर बैठे हुए अफ़सर इस तरह की साज़िशें करते हैं। क्या मंत्री महोदय दस पंद्रह सालों से एक स्टेशन पर बैठे हुए अधिकारियों को वहां से हटाएगें ? अगर उनको नहीं हटाया गया तो इस तरह की साज़िशें होती रहेंगी। मैं कहां तक इस कहानी को बताऊ ?—बहुत लम्बी कहानी है, अच्छी खासी किताब है।

मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि 1981 से अक्तूबर, 1982 तक रेलगाड़ियों और सुपरफ़ास्ट ट्रेन्ज में चोरियों, डकैतियों, लूट-पाट, कत्ल और औरतों के शीलभंग की कितनी घटनाए हुई हैं। कितनी औरतों के मंगल सूत्र छीन लिए गए हैं। क्या मंत्री महोदय यात्रियों की सुरक्षा की कोई गारंटी देंगे ? जो अफसर दस पन्द्रह साल से एक स्टेशन पर बैठे हुए हैं, वे इस षड्यंत्र को चला रहे हैं। पुलिस और सी० आर० पी० क्या करती है ? सी० आर० पी० का तो यही काम है कि अगर कोई लोग जुलूस या जलसे में जाते हैं, तो सैंट्रल गवर्नमेंट के इशारे पर उन्हें लूट लो, पीट दों, उनके हाथ-पैर तोड़ दो। अगर कोई एम० पी० या मिनिस्टर लुटता है, तो उनकी कोई परवाह नहीं है। इस वक्त इस देश में शासन नाम की कोई चीज नहीं है। मंत्री महोदय को इस बात पर इस्तीफा दे देना चाहिए।

नीलगिरि एक्सप्रेस मेरे डिस्ट्रिक्ट में से निकलती है। उसमें डकैती हुई, हत्या कांड हुआ, राइफल लूट ली गई, लेकिन सी० आर पी० का पता नहीं था। मैं जानना चाहता हूं कि क्या मंत्री महोदय एम पीज और मिनिस्टरों की सुरक्षा का प्रबन्ध और आम जनता के जान-माल और इज्जत की सुरक्षा का प्रबन्ध करना चाहते हैं या नहीं। वह इस बारें में आश्वासन दें। सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन अधिकारियों का दस पंद्रह साल से एक स्टेशन से ट्रांसफ़र नहीं हुआ है", क्या उन्हें ट्रांसफ़र किया जाएगा।

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI A. B. A. GHANI KHAN CHAUDHURI): Mr. Deputy-Speaker, Sir, the crime on railways is a serious problem and I would like to say that it is also a social problem.

PROF. N. G. RANGA (Guntur): It has increased.

SHRI A. B. A. GHANI KHAN CHAUDHURI: This has been giving us a great concern including the Prime Minister, who has appointed a Committee.

श्री मंगल राम प्रेमी : मंत्री महोदय, इतना कह दें कि मैं हिन्दी नहीं जानता

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please put on the headphone and listen to the translation.

SHRI A. B. A. GHANI KHAN CHAUDHURI: The Cabinet Secretary, as the Chief of the Cabinet is to find a solution to this vexed problem. They have given a number of recommendations all these recommendations—not all—are under our consideration and I assure the hon. Member and the hon. House that these will be implemented without any further delay.

There are certain vexed problems like the relationship of Railways *vis-a-vis* the G.R.P. Sir, you are aware that although, for the G.R.P., the Railway Administration gives fifty per cent of the cost, they have no control whatever and this policing business of railways is more a responsibility of the State Government than the Railways. When I say this, I do not shirk from the responsibility of the Railways. After the Tinsukia incident, immediately we took certain steps. We suspended the coach attendant because he was absent without notice. So, this I have done, I sent a Telex Message to the Chief Minister of U.P. to take specific action regarding this incident, requesting that he should take stringent action to check this menace. I have a copy of this Telex Message wherein I have said this:

> "On the Night of 9-10-1982 a serious theft occurred in 156 Tinsukia Mail in Delhi-Allahabad First Class coach, despite the presence of 3 CRP men in the Escort."

Now, this CRP man, I cannot suspend: I can't do it; the Railway Rules do not give me that power. Therefore, I have to seek the cooperation of the Chief Ministers to penalise the people. I can assure the House that I will pursue this matter and I will see that these people are suspended if they are at fault.

We have also appointed a Task Force and there will be supervision from the local Railways. A Group of Travelling Ticket Examiners and RPF and GRP personnel will be doing this and checking the passengers. The purpose of this Task Force is to give protection to *bonafied* passengers Our experience is that the anti-socials and ticketless passengers are getting more amenities than the bonafide passengers. We want to smash this. We are combating against this and we are determined on that.

I have also directed all the General Managers of the Railways of various zones to keep direct liaison with the Chief Ministers so that this policing business on Railways can be done successfully. We are on the job. But it hurts me when I hear certain things from the hon. Member when he referred to the Bareilly incident. What does it mean? Does it mean that we should be only silent spectators when the ticketless travellers go on doing their anti-social activities? Or, does it mean that we should move swiftly and do something? In the Bareilly incident what happened? Ticketless travellers were arrested. Now, if I am not allowed to have a drive against this, if you don't allow me to have this drive, I will stop this. But then you cannot complain that the Railways are not doing anything in the matter against this sort of gangsterism and ticketless travelling. I don't think that *bonafide* passengers will have the security of travel that they must have, if these things go on; it is bound to remain a nightmare for the bonafide passengers. For the benefit of the passengers and in the national interest we must have this drive and try to check gangsterism. In doing so, obviously I agree with the hon. Member that we should be careful and see that we do not commit excess. If there is any report of excess having been committed, I will welcome from the hon. Member that he should send me a report to this effect and I will certainly look into this. One point which I would like to make clear is that the drive will continue till we smash this gangsterism.

SHRI N. K. SHEJWALKAR (Gwalior): Sir, he did not give the details of the recommendations of the committee. He has mentioned about that. But he was not kind enough to let us know what the recommendations of the Committee are.

SHRI A. B. A. GHANI KHAN CHAUDHURY: I have got those recommendations. If you want, I can read them out.

MR. DEPUTY-SPEAKER: You can give them afterwards.

SHRI MANI RAM BAGRI: Sir, the hon. Minister wants to read out those recommendations.

MR. DEPUTY-SPEAKER: He wanted to know those recommendations. The Minister will give them to the Member.

SHRI ZAINUL BASHER (Ghazipur): Sir, it is a fact that crimes in the Railways are taking place. But it is also a fact that the position has changed now for the better, that is, for the last three to four months. Previously not a single day passed when we did not read in the newspapers regarding dacoity, robbery, murders, theft, etc. in the railways. But now it goes to the credit of the hon. Railway Minister who has taken over charge very recently and the Railway Administration have taken stringent measures and have effectively curbed the incidents of crime in the Railways. For this, Sir, I would like to congratulate the Railway Minister and at the same time I hope that the way in which they are now working and the steps which the hon. Minister is taking will reduce the incidents of crime still further and it would be very very negligible in future. Now, Sir, I would like to give some suggestions.

Sir, we are also travelling very frequently in the railways and we have also some experience regarding these matters. Very often I found that there was no coach attendant in the compartments. Sometimes throughout the journey period there was not a coach attendant. Sometimes in between the stations, there comes a coach attendant. It so happens that very often between New Delhi Station and Ghaziabad Station there is no coach attendant. The trains that come to New Delhi Station touching Ghaziabad, generally do not have the coach attendants after they leave Ghaziabad station. Similarly, from Moghalsarai to Allahabad, sometimes it happens like this.

The other point that I would like to emphasise is about the unauthorised passengers travelling in the second, first and even ACC class compartments. They are there in large numbers in the galleries, near the bathrooms etc. There is no control over these unauthorised passengers. I do not say that they are all thieves; there may be genuine people also. But they are unauthorised passengers, and among them may be some thieves also. There is no attempt on the part of the staff of the train or the railway station to remove these passengers. Even when complaints are made, they plead their helplessness. R.P.F., railway police and others do not come to our rescue. There are many such instances. These unauthorised passengers travel with the help of the coach attendant or the conductor. They pay some money to them and travel in these compartments. Efforts should be made by the railway administration to see that these unauthorised passengers are not allowed to travel in any class, second, first or ACC, because there may be some anti-social elements among them.

Thirdly, I would like to mention about the unauthorised and unlicensed porters. They are found at every station; they are there even right under our nose at Delhi and New Delhi stations. When the train stops, they come and say *saman lejana hai, saman lejana hai*. They are there before every compartment and there is no attempt on the part of the railway administration to curb this practice. If there is shortage of porters, and there is need

for more porters, issue them licences. I saw a letter to the Editor in the *Hindustan Times* four or five days ago. A passenger, who took the services of an unauthorised porter lost his belongings worth Rs. 6000. He reported the matter to the railway station, but nothing has been done so far. It appeared in the newspaper. Daily such instances are taking place. There should be a check on the unlicensed porters. If there is any shortage, as I said, more licences should be issued according to the requirements.

Then, there is a thinking in favour of giving more powers to the RPF. I do not know whether it is possible under the Constitution to give police powers to RPF. The Railway Minister may kindly enlighten us. The police powers are now with the GRP. I do not know the legal and constitutional position whether we can provide these powers to the RPF. But an attempt should be made to give more powers, mor than what they now have, to the RPF personnel, so that they can be more effective in checking the thefts and other matters. The hon. Minister was telling that 3 GRP constables were escorting the Tinsukia Mail. I would like to know from him whether he feels that three constables are enough to escort the Tinsukia Mail in which thousands of pasengers travel. Why are you going to take action only against these three poor people? What can the three constables do? The Allahabad coach is always at the very end of the Tinsukia Mail; and if the three constables happen to be near the engine, how can they check this sort of an incident? So, there is need to increase the number of personnel, whether they are of GRP or of RPF. An adequate number, at least one person in each compartment, should be provided. Then you can effectively curb crime and other things.

I would also like to ask the hon. Minister whether he has received any response to his Telex which he sent to the Chief Minister of U.P.; whether the latter has contacted him; and after his contacting him, whether the Chief Minister has sent any replies. Has he talked to him? What has happened till now? The Minister may kindly enlighten us on these also.

Lastly, will the Minister assure us that as per the suggestions which I have given—they are not my own suggestions; they always appear in the newspapers, and this sort of suggestions have been given in the House also previously—he will take action?

SHRI A. B. A. GHANI KHAN CHAUDHURI: I have taken note of the suggestion about coach attendants; and I can assure the hon. Members and the House that we will look into it.

With regard to unauthorized passengers, any passenger who has not bought the ticket is just a trespasser, and we should severely deal with trespassers. There should not be any mercy shown to the trespassers.

With regard to the point he made about RPF, we are studying this question. At the present moment, RPF is only authorized to protect Railway property and not Railway personnel. We are thinking of bringing an amendment, authorizing these people to give protection not only to railway property, but also to railway personnel, so that they can discharge their duties satisfactorily and loyally.

PROF. N. G. RANGA: And you should increase their number.

SHRI A. B. A. GHANI KHAN CHAUDHURI: Now about my communication to Chief Ministers, including the Chief Minister of U.P.; I have received his reply, but I have not received the reply to the particular Telex that I have just sent, i.e. sent yesterday afternoon. I am expecting some reply from him.

MR. DEPUTY-SPEAKER: You must state the recommendations of the committee. You can place them on the Table of the House.

PROF. N. G. RANGA: And increase the number of RPF personnel.

SHRI A. B. A. GHANI KHAN CHAUDHURI: I wanted to save the time of the House; that is why I did not say that. (*Interruptions*.

श्री भाखा भाई (बांसवाड़ा) : उपाध्यक्ष महोदय, रेल मंत्री जी ने जो जवाब दिया है, वह एक आउट-डेटेड जवाब है और हमेशा ही ऐसा जवाब होता है। यह जवाब इस से पहले इनके प्रिवियस मिनिस्टर साहब सेठी साहब थे, उन्होंने भी कहा था कि आर० पी० एफ० जी आर० पी० के अन्दर कोआर्डिनेशन लाने की बात करेंगे। यह सारी बातें कही गई थीं। मुझ दुख के साथ कहना पड़ता है कि

"I share the concern of the members about the incidence of crime on railways."

This is totally all wrong. Why do you say this? I will prove it. Day before yesterday I came from Narwana. I was travelling by First-Class on 10-10-1982. The train number is 344 DN and in that train not a single man from the checking side was there; no TTE was there; no coach attendant was there. Now the Minister says that he is trying to intensify the drive against the ticketless travel. I would have been happy if he had inspected it. May I know whether he is travelling in *cognito* to check ticketless travel; whether his officers are also travelling in *cognito* to check ticketless travel in any of the trains? Why should a poor man like coach attendant be suspended? Has he caught hold of any of his officers? I tell you that my First-Class compartment in which I was travelling was full of unauthorised persons. I was the only person who was travelling with a pass.

There was no water. What to talk of taking bath, there was no water even to wash hands. I want to know whether he will enquire into it. I want that he should catch hold of that train and enquire into it and give a report immediately. There was no TTE no coach attendant, what to talk of safety measures. They are always talking and talking; but there is no improvement in the trains.

Every day murders are taking place; thefts are taking place; dacoities are taking place and chain pulling is aking place. Sometimes when a chain-pulling takes place, the police men hide themselves in the bath room.

I have got with me a cutting from the *Times of India* dated 11-10-1982. I hope the Minister has also seen it; if not, I want to place it on the Table of the House. I want him to enquire into it. In it, it was mentioned that these things are happening in collusion with the police officers and the RPF. Everything is done under the very nose of the RPF and even the railway officers. What preventive measures have you taken to check all these things? I would suggest that there should be a periodical checking by the senior railway officers and even by the Railway Minister himself. Even the General Manager travels in a Saloon Coach, what to talk of other officers. I would suggest that the Railway Minister should check these things himself sometimes so that it may be known to the public as well as to the railway authorities so that they may become more vigilant.

I want that an immediate enquiry should be ordered about that particular train in which I was travelling right now and see whether I am right or wrong. That should be proved. What time will it take to bring forward the amendments? He says he has written to the Chief Minister and expecting a reply soon for improving the GRP. He always takes shelter under the pretext of writing to the Chief Minister, Why should not the Central Government institute their own force to pro-

tect the passengers or strengthen RPF? Why should there not be a police man in every compartment? This has not been done.

It is not a good thing to suspend the attendant. If any action is to be taken it should be taken against the higher officers. They say that they are very vigilant about the drive against ticketless travel. But I tell you there was not a single man from the checking side or TTE in the train in which I was travelling from Narwana to Delhi. There was not a drop of water in the train. I can produce so many witnesses who were travelling with me. Is there any drive against ticketless passengers? Then, the third point is, that there is lot of lethargy in the Railway administration from top to bottom at all levels. About fifteen days ago I sent a telegram and three letters asking for some reservation. Nothing has been done so far. I had requested the Minister just now. He said that he has received them, and that he will look into it. He is a big man and he is given a big job. But such things are to be avoided.

13.00 hrs.

MR. DEPUTY-SPEAKER: You have made very valuable points.

SHRI BHEEKHABHAI: There is lot of sluggishness in the Railways. I want to bring it to your notice. I would like to know the time by which the proposed amendment is going to be brought. Last time Shri P. C. Sethi said that he would be bringing it in the next session. But the next session is going to be over now.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I think he has not met Mr. Sethi so far.

SHRI BHEEKHABHAI: We want to know from the Minister whether there has been an increase in the number of dacoities, thefts and chain-pullings during this current year. Let us not talk about last year or the year before the last. Let us talk about this year and the corresponding figures for the last year.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, the Minister will reply.

SHRI A. B. A. GHANI KHAN CHAUDHURI: Mr. Deputy-Speaker, from the Railway-side we have never claimed that the things are ideal. It is not. There is a lot of scope for improvement, and we will improve. If we do not improve the image of the Government and the image of the Railways will go down in the eyes of the people. So we are careful.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY (Calcutta): It has already gone down.

SHRI A. B. A. GHANI KHAN CHAUDHURI: So far as the traffic of wagons is concerned, we have done a marvellous job. Today we are able to provide all the wagons that are required for the key sectors. But I do admit that we have not been able to achieve the desired results so far as passenger trains are concerned. I can assure the hon. Member that we will do our best. But we do not have a magic lantern which I can rub and something will just come from heavens. We have to make persistent efforts and in this regard I want the cooperation of all the Members irrespective of any political affiliation, as it is for the development of the country. After all, what is travel by Railways now? Travel by Railways is a nightmare now. There is a question of safety, there is the question of punctuality, dacoity, etc. We are not silent spectators to all this. We are trying to combat all these evils.

I would like to tell the hon. Member that for this purpose a Task Force has been entrusted with this responsibility. We have appointed a Task Force and their function is intensifying the ticket-checking prevention of aunauthorised entry into compartments coordination with the local State Government authorities and ensuring proper amenities for the travelling pas-

[Shri A. B. A. Ghani Khan Choudhuri]

sengers. That is why, one by one, in all the zones I have instituted these Task Forces and I am sure that the Members will be able to know the results very soon.

With regard to the amendment, if every thing goes all right, we intend to bring it during the Budget Session. Thank you.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Rajnath Sonkar Shastri.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : आज से चार पांच मास पहले बजट सत्र जब प्रारंभ हुआ था उस समय भी इतफाक से इसी विषय पर एक कालिंग एटेंशन आया था और उस पर भी मेरा नाम था। तब मने यह कहा था कि अब इस देश के किसी भी आदमी को यह भरोसा नहीं रह गया है कि रेल में वह सुरक्षित रूप से यात्रा कर सकेगा कि नहीं ? गन्तव्य स्थान पर पहुंच जायेगा कि नहीं, बीच ही में तो उसके साथ बलात्कार, लूटपाट, हत्या नहीं होगी, किसी भी दुश्मनी का बदला रास्ते में ही तो उससे नहीं ले लिया जायेगा। क्योंकि यह आज कल सब रेलों में हो रहा है। उस समय डिप्टी मिनिस्टर, श्री मल्लिकार्जुन, जो शंकर भगवान के नामधारी हैं, बड़ी बहादुरी से उन्होंने उत्तर दिया था कि यह सब बिल्कुल उल्टी सीधी बात है। और हमारी सरकार इसे रोकने का पूरा प्रयास कर रही है : क्या हुआ मल्लिकार्जुन जी ?

अब म आधा मिनट आजकल के पेपरों के कुछ हैडिंग्स की तरफ आपका ध्यान दिलाऊंगा जो भंयकर स्थिति रेलों में है। "जाली रेलवे टिकटों का गोरख धंधा, 5 अभियुक्तों के विरुद्ध सी० बी० आई द्वारा अभियोग-पत्र दाखिल।" "दिल्ली आ रही तूफान एक्सप्रैस में डाका", "हिमिगिरि एक्सप्रेस में यात्रियों का चार लाख का सामान लूटा गया", "हवलदार की हत्या कर दो राइफलों की लूट", "झेलम एक्सप्रेस में डाका और गर्भवती महिला की हत्या", "मालगाड़ी से चुराये गये मेना के 35 पेटी कारतूस बरामद"। "रेलवे खजाने का ढाई लाख रुपया और युवती को लेकर खजांची फरार।" यह डिप्टी मिनिस्टर श्री मलिकार्जुन जी के भाषण के बाद की हुई घटनायें हैं। कहने का मतलब यह है कि आज भी समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। हो सकता है कि कभी फिर मेरा काल अटेंशन इस विषय पर आवे। एक मेम्बर ने पूछा था कि अक्तूबर, 1981 से ले कर अक्तूबर 1982 तक चोरी और लूट की कितनी घटनायें हुई ? मंत्री जी ने इसका जवाब नहीं दिया। लेकिन इसका जवाब दे रहा हूं। इस बीच 19 हत्यायें हुई हैं, 36 डाके, 76 लूटपाट की घटनायें एक साल के, अन्दर हुई। मान्यवर, समस्या काबू के बाहर हो गई है, अन्य माननीय सदस्यों का कहने का मतलब भी यही था कि समस्या काबू के बाहर हो गई है। मैं मंत्री जी से पहला सवाल पूछना चाहता हूं : (1) आप बतायें कि क्या वाकई में यह समस्या जो इस समय रेल में चल रही है यह सरकार की पकड़ के बाहर है कि नहीं ? यदि सरकार की पकड़ से बाहर नहीं है, सरकार इस पर नियंत्रण कर सकती है तो श्री मल्लिकार्जुन के उत्तर देने के बाद इतनी घटनायें क्यों हुई ? और जो घटनायें हुई उनमें कितने लोग पकड़ गये और कितनों को सजा मिली और उस पर क्या कार्यवाही हुई, इसका विवरण म चाहता हूं।

कालिंग अटेंशन का पहला पोर्शन था तिनसुखिया मेल में दुर्घटना संसद सदस्यों के साथ जो हुई। इसको छोड़ दिया जाय, जैसा मैंने पढ़ा, एक संसद सदस्य की हैसियत से नहीं बोल रहा हूं, हमारे बी० डी० सिंह

और श्री के० पी० तिवारी यात्रा कर रहे थे। तिनसुखिया मेल के चलने का समय 10 बजकर 5 मिनट है और उस दिन यह गाड़ी 10.36 मिनट पर चली थी? क्यों? आधा घंटा लेट, गार्ड गाड़ी को ले कर चला। वहां पर संसद सदस्य पहुंचे, आरक्षण चार्ट को देखा जा रहा था। बड़ी लापरवाही है कि आरक्षण चार्ट में किसी का नाम नहीं है। और जब इन दोनों सदस्यों ने जा कर रेलवे अधिकारियों से बात की, सदस्यों ने पूछा कि यात्रा की क्या व्यवस्था बनाई गई है किसी ने कहा कि जो यात्री जहां चाहें वहां बैठें। माननीय संसद सदस्य जहां चाहें वहां बैठ जायें। हमें यह बताया जाये कि यह बात ठीक है या नहीं? हमको सत्ता पक्ष के द्वारा यह पता चला है कि उस दिन आरक्षण चार्ट वहां नहीं था। मैं यह जानना चाहता हूं जो व्यक्ति आरक्षण करा कर जाता है, वह जहां चाहे वहां बैठ जाये, इसका मतलब क्या है? इसके मायने यह हैं कि इस दुर्घटना में संसद सदस्यों को जान से मार डालने की पक्की साजिश थी।

यह ट्रेन चली और उसमें चोरी कैसे हुई, इस पर गौर करने की बात है। पिछले 3 डिब्बों में से जो उसके क्लोज दरवाजे होते हैं सैकिंड में से फर्स्ट में और फर्स्ट में से सेकिंड में आने का उनको खोल दिया गया और खुलने के बाद चोर सैकिंड क्लास में से फर्स्ट क्लास में घुसे। उसमें एक भी अटेंडेंट नहीं था, कंडक्टर नहीं था और न सशस्त्र पुलिस ही थी।

जब चोर उसमें आता है तो उपाध्यक्ष महोदय, आप भी अनुभव करते होंगे, हमारे नये मंत्री जी पता नहीं समझते हैं या नहीं, वह बड़े जोश में भाषण दे रहे थे, जिसकी मैं कद्र करता हूं और मैं ऐसा मानकर चलता हूं कि हो सकता है कि वह रेलवे की व्यवस्था को ठीक कर दें और अगर वह ऐसा कर दें तो हम देश के लोग उनको बधाई देते हैं, लेकिन मैं इनका ध्यान इस बात की ओर दिलाना चाहता हूं कि एक संसद सदस्य पार्लियामेंट में बहुत सारी बातें बोलता है, बहुत ऐसे कार्य करता है जो बहुत कुछ अपराधी तत्वों के लिये, अराजक तत्वों के लिये पिच करता है, मने 64 पत्र भेजें हैं जिसमें लिखा है कि राजनाथ सोनकर शास्त्री की हत्या कर दी जायगी। जब हम उस गाड़ी में जा रहे हैं और अपने केबिन का दरवाजा बन्द कर लेते हैं, तो उस दरवाजे में एक सिटकनी लगी होती है। हम जानना चाहते हैं कि वह सिटकनी कैसे खुल गई? इसका मतलब यह है कि वह सुरक्षित नहीं है और उसमें किसी संसद् सदस्य को यात्रा नहीं करनी चाहिये। जब आदमी केबिन का दरवाजा बन्द कर लेता है तो आराम से सोता है कि अब कुछ नहीं है। हम सुरक्षित हैं। लेकिन अगर वह सिटकनी खुल जाये तो उसमें क्या कुछ नहीं हो सकता है, कोई व्यक्ति किसी को पिस्टल मार दे? इस पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये।

यह जो चोरी की घटना हुई है, इसमें चोर संसद् सदस्यों का सामान लेकर बाथरूम में घुस गये वहां उन्होंने उसे खोला और देखा। उसमें से उन्होंने एक भी कपड़ा नहीं निकाला, कोई कागज पत्र नहीं लिया। उन्होंने केवल रुपये पैसे की चोरी की। मैं चोरी की बारीकी की बात कर रहा हूं।

आज के पहले एक समाचार था जो इस हाउस में भी उठा था। लखनऊ मेल में चोरी हुई थी। एक माननीय सदस्य ने बयान किया था कि "एक यात्री जब स्नान घर से हाथ धोकर निकला तभी उस ने बदमाशों को देखा। बदमाशों ने उसकी छड़ी छीन ली। यह आश्चर्य की बात है कि बदमाशों ने किसी यात्री का

[श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री]

कपड़ा नहीं लिया। इस घटना में भी कपड़ा नहीं लिया और उसमें भी कपड़ा नहीं लिया। वह एक बहुत बड़ी दुर्घटना थी। बदमाश कराब डेढ़ घंटे तक लूटपाट करते रहे। "जब एक आदमी ने इसका प्रतिरोध किया तो बदमाशों ने उसे घायल कर दिया।" यहां तो किसी को घायल नहीं किया, लेकिन एक घंटे तक नहीं, बल्कि 3 घंटे तक बाथरूम में वह सामान खोलकर लूटते रहे। इतना मौका उनको मिला, यह भी गौर करने की चीज है।

संसद सदस्य महावीर प्रसाद जी वाली दुर्घटना लखनऊ मेल में हुई, इसमें एक संसद-सदस्य को बुरी तरह से पीटा भी गया था।

तिनसुखिया मेल में जो यह घटना हुई है, उसके बारे में मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इस प्रकार की जो 2-3 घटनाएं हुई हैं, इसके लिये क्या वह सी० आई० डी० को या कोई और जांच बैठायेंगे? क्योंकि यह बहुत गंभीर मामला है, इसका उत्तर हम लोगों को जांच बैठाकर दें।

इस घटना के बाद जब गाड़ी कानपुर पहुंची और संसद्-सदस्यों ने उतर कर स्टेशन मास्टर और दूसरे लोगों से शिकायत की, तो लाउड-स्पीकर पर एनाउंस किया गया कि अगर जी० आर० पी० का या आर० पी० एफ० का कोई आदमी हो, तो आए। बारह-तेरह बार यह एनाउंस कराया गया, लेकिन कोई भी कर्मचारी वहां नहीं पहुंचा। एक अटेंडेंट को तो सस्पेंड कर दिया गया है, लेकिन क्या और कर्मचारियों की भी कोई ड्यूटी थी या नहीं? क्या कंडक्टर की कोई ड्यूटी थी या नहीं? हम जानना चाहते हैं कि डी० आर० एन० ने इस बारे में कितनी दिलचस्पी ली।

जब गाड़ी इलाहाबाद पहुंची, तो श्री के० पी० तिवारी और श्री वी० डी० सिंह ने रिपोर्ट लिखाई। अखबार वालों ने दो-तीन घंटे बाद थानेदार से पूछा कि क्या आपके यहां कोई रिपोर्ट लिखाई गई है। उन्होंने कहा कि नहीं, हमारे यहां कोई रिपोर्ट नहीं लिखाई गई है। इलाहाबाद के एक अखबार में यह बात छपी है। उसकी कटिंग मेरे पास नहीं है, वर्ना मैं यहां दे देता। यह है रेलवे की लापरवाही।

मंत्री महोदय ने कहा है कि यह जी० आर० पी० का मामला है और राज्य सरकारों का भी मामला है और राज्य सरकारों की भी जिम्मेदारी है। मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि यदि राज्य सरकारों की जिम्मेदारी है, तो क्यों नहीं इस रेल विभाग को निकाल कर राज्य सरकारों को सौंप दिया जाता कि वे अपनी व्यवस्था करें। क्या जरूरत है केन्द्र में रेल मंत्री की और लाखों करोड़ों रुपए व्यय करने की? जब राज्य सरकारें सुरक्षा के लिए उत्तरदायी हैं, तो वे ही यह काम करें, ऐसा विधेयक लाया जाए।

SHRI A. B. A. GHANI KHAN CHAUDHURI: Kindly support the amendment.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : मैं जानना चाहता हूं कि पिछले एक-दो साल में जितनी घटनाएं हुई हैं, उनके सम्बन्ध में कुल कितने रेलवे अधिकारी और रेलवे कर्मचारी मुअत्तिल किए गये हैं या सजा पाए हैं। कर्मचारी वैसा ही होगा, जैसा उसका अधिकारी होगा। इसमें सारी की सारी जिम्मेदारी अधिकारियों की है। माननीय मंत्री, श्री मल्लि-

कार्जुन, याद रखें कि एक दिन उन्हें हमारी बात की सच्चाई समझ में आएगी कि बनारस में उन्होंने जो दुर्घटना की, उसका परिणाम मुल्क के लिए भयंकर है। उसकी सारी जिम्मेदारी आप पर है। मैं उसको एक बार हाउस में रिपोर्ट कर चुका हूं, इस लिए उसे फिर रिपोर्ट नहीं करना चाहता।

बरेली की घटना के बारे में हमारे बहुत से मित्रों ने कहा है। मैं उसके सम्बन्ध में ज्यादा नहीं कहूंगा। वहां पर जब लोगों को उतारा जाने लगा, तो उसी समय रेलगाड़ी को भी चला दिया गया। इसमें क्या तुक थी? जब टिकटों की चैकिंग हो रही थी, दोषी और निर्दोष सब पीटे जा रहे थे, क्या तब रेलगाड़ी चलाई गई थी या नहीं? टिकटों की चैकिंग गाड़ी को रोक कर होती है। जब वहां पर पिटाई शुरू हो गई, जब डंडे पड़ने लगे, तो उसी बीच में रेलगाड़ी चला दी गई। इसका क्या कारण था?

कहा जाता है कि वह रैली की गाड़ी थी। पता नहीं, किसकी रैली थी, इसमें हमें कोई इन्ट्रेस्ट नहीं है। और फिर यह तो सत्ता पक्ष की देन है। गत वर्ष कांग्रेस की रैली चल रही थी। मैं भी आ रहा था। चार दिन तक कोई भी आदमी गाड़ी में टिकट ले कर बैठ कर आने के काबिल नहीं था। तब श्रीमती इंदिरा गांधी प्राइम मिनिस्टर थीं। संजय गांधी साहब की मृत्य हो हुई। हमको उनके प्रति पूरी सहानुभूति है। लेकिन जब श्री राजीव गांधी उनकी अर्थी लेकर चले थे, तो विशेष गाड़ियां चल रही थीं और उनमें बिना टिकट यात्रा हो रही थी। (व्यवधान) आपने ठीक कहा कि आफिशल रूप में चलाई जाती है।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI C. K. JAFFER SHARIEF): I am sorry the Calling Attention is only on...

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : यह टिकट-चोरी का मामला है, रेलवे में चोरी का मामला है।

SHRI C. K. JAFFER SHARIEF: The Calling Attention is referring to only two specific items. He cannot go on narrating all sorts of things with regard to what he is referring to about Shri Sanjay Gandhi's death and what happened when his ashes were taken. It has been fully paid for.

(*Interruptions*)

कालिंग एटेंशन नोटिस का यह मतलब नहीं है कि जो चाहें कहिये। जिस पर कालिंग एटेंशन नोटिस है, उस पर बोलिये।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : जो सबजक्ट होता है, मैं उसी पर बोलता हूं। डिपुटी स्पीकर साहब, इस बारे में फैसला करें। अगर वह चाहे, तो सब कुछ निकाल दें।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Mr. Sonkar Shastri, the Calling Attention is specifically on this...

(*Interruptions*)

SHRI C. K. JAFFER SHARIEF: It is totally irrelevant. (*Interruptions*). It should be expunged. It has nothing to do with this. Only matters relating to Calling Attention should be raised.

(*Interruptions*)

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY: What is the Minister demanding? It should be expunged. No, no.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : मैंने कोई ऐसा शब्द नहीं कहा है जिसका इस घटना से संबंध न हो।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Calling Attention is on a particular subject. He is only suggesting.

(*Interruptions*).**

You come to the Calling Attention's last point.

(व्यवधान)

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : आप संजय गांधी के भक्त हैं, फिर और भी बहुत लोग भक्त है।

(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I know my duty.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : दिल्ली स्टेशन पर भी घटना हुई है इसलिये उसका भी इस कालिंग अटेंशन से संबंध है।

MR. DEPUTY-SPEAKER: You have already taken twenty minutes.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : कोई भी स्टेशन चाहें वह दिल्ली हो, लखनऊ हो, कलकत्ता हो या बम्बई हो, वह आजकल गुंडागर्दी के अड्डे बन गये हैं। इस गुंडागर्दी की ओर भी मंत्री जी का ध्यान जाना चाहिये। विभिन्न स्टेशन्स पर मिसलेनियस, चाय, फलों और बुक स्टाल्स एलाट कर दिये गये हैं। कैसे दिये गये हैं यह भी हम जानते हैं। हमें विश्वास है कि मंत्री जी भी इसका पता जरूर लगायेंगे कि 20–25 साल से दूकानें एक-एक आदमी के नाम से एलाटेड है और उन पर जो काम करने वाले हैं वे रेलवे स्टेशन के गुंडे हो गये है। उनकी कुलियों से साथ सांठ गांठ होती है, चोरों से सांठ-गांठ रहती है और वे हर महीने अधिकारियों को रुपया पहुंचाते हैं। यदि उनके खिलाफ कोई कंप्लेंट लिखी जाती है तो उस पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। इस एलाटमेंट को भी खत्म करना होगा। यदि नहीं खत्म करते हैं तो उनको अच्छी तरह से देखना होगा।

(व्यवधान)

उपमंत्री श्री धर्मवीर जी जब जा रहे थे तो रेल गाड़ी में उनकी अटेची चुरा ली गई। जैसे ही जाकर डिब्बे में उन्होंने रखा, वह चुरा ली गई (व्यवधान)

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF LABOUR AND REHABILITATION (SHRI DHARMAVIR): What is this? We cannot understand.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please conclude.

Every hon Member knows the rules and it is not for me to dictate rules to them. He must know the rules.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : उपाध्यक्ष जी, आप डिसाइड करें मैं क्या गलत कह रहा हूं। धर्मवीर जी की अटैची चुरा ली गई, क्या उसका इससे संबंध नहीं है?

MR. DEPUTY-SPEAKER: There is no general discussion going on now. You may mention all these things here. But you cannot get reply from the Minister. All this information is not going to be available with them.

श्री सी० के० जाफर शरीफ : बरेली और तिनसुखिया मेल में जो घटनायें हुई हैं उनके संबंध में माननीय सदस्य बोल।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : आपकी अटैची चोरी हो जायगी तो वह मामला इस काल अटेंशन में आयेगा या नहीं? (व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, यदि आप पाबन्दी लगा देंगे तो मैं नहीं बोलूंगा।

MR. DEPUTY-SPEAKER: If you do not focus, the atention on the subject in the Calling Attention...

(Interruptions)

You may please conclude now. Now the Minister will reply.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : मैं तो रेल मंत्री का स्वागत कर रहा हूं और उन को बता रहा हूं कि इन बातों का सामना उन्हें भविष्य में करना पड़ेगा ।

श्री मल्लिकार्जुन : उपाध्यक्ष जी, माननीय सदस्य ने जो आरोप लगाया है कि दो माननीय सदस्यों की हत्या करने की साजिश की गई , यह पूरी तरह से गलत है ।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : क्या आप उत्तर दे रहे हैं ।

श्री मल्लिकार्जुन : जी, हां ।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : उपाध्यक्ष महोदय, मैं इनकी भी बातें सुनूंगा ये बहुत अच्छी बातें कर रहे हैं लेकिन.. (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: He is not yielding. He is replying.

श्री मल्लिकार्जुन : मान्यवर, यह बात संपूर्ण तरीके से बेबुनियाद है । किसी भी माननीय सदस्य की हत्या करने की कोई साजिश नहीं की गई । (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Every hon. Member should not take political advantage. Such recurrence can be stopped. That is why discussion has been permitted by the speaker.

व्यवधान

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY: How does he know that? How do you know their intention?

श्री मल्लिकार्जुन : तिनसुखिया मेल के 10.35 पर रवाना होने का कारण यह था कि उस ट्रेन के अन्त में इलाहाबाद कोच लगाया जाता है और तिनसुखिया मेल जब इलाहाबाद पहुंचता है तब उसको निकाल दिया जाता है । उस दिन जो कोच लगाया गया वह ठीक स्थिति में नहीं था, तुरन्त ही अच्छा कोच लगाने में देर हुई है । मान्यवर, ट्रेन्स की सुरक्षा और डकैती तथा चोरी के मामले में जो विरोधी पक्ष के द्वारा आरोप लगाया है, इस बारे में सरकार गंभीरता से सोच रही है । हाल ही में प्रधान मंत्री जी ने स्वयं कैबिनेट सैक्रेटरी के तहत एक कमेटी बना कर यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिये और इस का अन्त करने के लिये उसको अधिकार दिया गया है । जो कमेटी सिफारिश करेगी, उनको संपूर्ण तरीके से अमल करने के वास्ते प्रयत्न कर रही है । किस तरह से जी आर पी एफ , ड्राइवर और गार्ड-इन तीनों में किस प्रकार से संबंध रहना चाहिये, चाहे इसके लिये हमें इलैक्ट्रानिक या इलैक्ट्रिकल डिवाइस का उत्पादन करना पड़े, इसके लिये हम कोशिश कर रहे हैं ।

अब एंटी-सोशियल एलीमेंटस का सवाल है, जो चेन पुलिंग करते हैं, एक आतंक का वातावरण रेलवे के अन्दर पैदा करते हैं, उन लोगों को सजा देने के लिये हम लोग एक्ट में संशोधन करने पर विचार कर रहे हैं, ताकि उनको सख्त से सख्त सजा दी जा सके । इस प्रकार सरकार विचार कर रही है कि लोग सुरक्षा से गाड़ी में यात्रा कर सकें और अपने गंतव्य स्थान तक पहुंच सकें ।

[श्री मल्लिकार्जुन]

बरेली में जो बिना टिकट यात्रा करने का सवाल है, वहां मैजिस्ट्रेट भी थे, वहां 253 लोग बिना तिकट के यात्रा करते हुये पकड़े गये । वहां पर चैकिंग स्टाफ के दो लोगों को चोट भी लगी हैं। उस वक्त हमें आर० पी० एफ० और जी० आर० पी० की सहायता लेनी पड़ी । इस क्लैश में 13 पैसेन्जर को जरूर कुछ चोट लगी है । जिस प्रकार सारे सदन में 1981 में बिना टिकट यात्रा करने वाले लोगों को चैक करने के लिये सहयोग दिया था, मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे आज भी हमें देंगे । श्री शास्त्री जी को बताना चाहता हूं कि 1981 में एक साल के अन्दर रेलवेज को 50 करोड़ रुपया मिला, बिना टिकट यात्रा करने वाले लोगों से । यह कोई मामूली चीज नहीं है ।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : खर्चा कितना हुआ ।

श्री मल्लिकार्जुन : खर्चा ज्यादा नहीं है ।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : आमदनी के खर्चा ज्यादा है, कम है ?

श्री मल्लिकार्जुन : संपूर्ण तरीके से आमदनी से खर्चा कम है । आपका गलत ख्याल है ।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री: आप यह क्यों कह रहे हैं कि ख्याल गलतप्है । उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्लाइंट आफ आर्डर है ।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The point of order has nothing to do with the Call attention.

(Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please. You reply. You also do not go beyond the call attention.

श्री मल्लिकार्जुन : बिना टिकट जो यात्रा करते हैं, इन लोगों को रोकना बहुत आवश्यक है । इस समय हम कई टैवलर एजेंटस को रोक चुके हैं और रोक रहे हैं । इस तरीके से प्रयत्न हो रहा है, फिर भी असंतोष है, उसको दूर करने के लिये हमारे माननीय मंत्री जी बता चुके हैं । हमारे रेल मंत्री जी ने स्टेट चीफ मिनिस्टर्स को लिखा है और यात्रियों की सुरक्षा और दूसरी सस्याओं के बारे में कोआर्डीनेट करके यात्रियों को सुविधायें दे कर उनके गन्तव्य स्थानों तक पहुंचाने का काम संपूर्ण तरीके से हम कर रहे हैं ।

14.31 hrs.

The Lok Sabha adjourned for Lunch till Thirty Minutes past Fourteen of the Clock.

The Lok Sabha re-assembled after Lunch at thirty-six minutes past Fourteen of the Clock.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair.*]

MATTERS UNDER RULE 377

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now we take up matters under Rule 377.

*(i) NEED FOR WIDENING OF NATIONAL HIGHWAY NO. 5 BETWEEN CUTTACK AND BHUBANESHWAR IN ORISSA.

SHRI LAKSHMAN MALLICK: (Jagatsinghpur): Cuttack, the biggest commercial city of Orissa and Bhubaneshwar, the State capital are connected by National Highway No. 5. The traffic on this portion of the National Highway has increased tremendously in recent years. With the increase in the vehicular traffic, the number of motor accidents are

*The original speech was delivered in Oriya.